

उत्तर प्रदेश कृषि अनुसन्धान परिषद
द्वारा
सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ
का भ्रमण करने और समीक्षा के उपरांत की
कार्यवृत्त
कृषि शिक्षा कि प्रगति रिपोर्ट



उ० प्र० कृषि अनुसन्धान परिषद्
निकट राजकीय उद्यान ,करियप्पा मार्ग,आलमबाग, लखनऊ(उ० प्र०)- २२६००५

कृषि शिक्षा प्रगति रिपोर्ट

सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, के दौरे की कार्यवृत्त

4-5 अगस्त 2025 को, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार), लखनऊ के निम्नलिखित सदस्यों ने पिछले तीन वर्षों [2022-2025] के अनुसंधान, शिक्षा और प्रसार तथा संबद्ध कृषि महाविद्यालय में शिक्षा की समीक्षा के लिए सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, का दौरा किया।

1. डॉ. संजय सिंह, महानिदेशक
2. डॉ. परमेन्द्र सिंह, उप-महानिदेशक (कृ० शि० एवं प्रौ० ह०)
3. डॉ. राजर्षि कुमार गौड़, उप-महानिदेशक (अनु० परि० प्र० एवं सम०)

उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट

1.	शिक्षण एवं तकनीकी पद विवरण			तकनीकी एवं सहायक स्टाफ		
	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
	30	20	10	-	-	-
2.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का क्रियान्वयन (पिछले 3 वर्ष)					
	● राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का क्रियान्वयन शैक्षणिक सत्र 2024-25 से किया गया।					
3.	छठी डीन समिति का क्रियान्वयन एवं चुनौतियाँ					
	● महाविद्यालय में 6वीं डीन समिति की अनुशंसाओं को शैक्षणिक सत्र 2024-25 से लागू किया गया।					
4.	"विकसित भारत@2047" हेतु दृष्टिकोण					
	● उद्यानिक फसलों में नई तकनीकों का परिचय एवं कार्यान्वयन, ताकि किसानों की आय दोगुनी की जा सके।					
	● खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु उद्यानिक फसलों की जैव-संपोषित किस्मों का परिचय।					
	● उद्यानिकी विकास हेतु मानव संसाधन का विकास।					
	● मानव स्वास्थ्य सुधार के लिए विशेषकर सब्जियों में जैविक एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना।					
5.	छात्र नामांकन प्रवृत्ति (यूजी/पीजी/पीएच.डी- पिछले 3 वर्ष)					
	वर्ष	छात्र संख्या				
	2022-23	63				
	2023-24	54				
	2024-25	67				
6.	विदेशी छात्रों का नामांकन (SAARC/ Non-SAARC)					
	वर्ष	SAARC	Non-SAARC			
	2022-23	-	-			
	2023-24	-	-			
	2024-25	-	-			

7.	प्रकाशन (NAAS ≥ 6) – पिछले 3 वर्ष	
	वर्ष	प्रकाशन संख्या
	2022-23	07
	2023-24	08
	2024-25	08
8.	छात्र-शिक्षक अनुपात (एम.एस.सी./पीएच.डी.)	
	6.81:1	
9.	प्राकृतिक खेती पाठ्यक्रम / अनुसंधान की स्थिति	
	<ul style="list-style-type: none"> 03 पाठ्यक्रम प्रचलित हैं (मृदा उर्वरता एवं पोषक तत्व प्रबंधन, जैविक खेती, जैविक सब्जी उत्पादन) 	
10.	पेटेंट की संख्या (पिछले 3 वर्ष)	
	वर्ष	संख्या
	2022-25	02
11.	किसान स्तर पर अपनाया जाना एवं प्रभाव	
	-	
12.	छात्र प्लेसमेंट (पिछले 3 वर्ष)	
	वर्ष	संख्या
	2022-23	14
	2023-24	25
	2024-25	30
13.	पेड इंटरशिप की संख्या	
	43	
14.	छात्र JRF / SRF की संख्या (पिछले 3 वर्ष)	
	वर्ष	संख्या
	2022-25	07
15.	नवाचार केन्द्र/इन्क्यूबेशन/स्टार्ट-अप/उद्यमिता	
	11	
16.	शैक्षणिक सुदृढीकरण की भविष्य योजना	
	<ul style="list-style-type: none"> फसल कटाई के बाद प्रबंधन पद्धतियों के माध्यम से पौष्टिकता मूल्य की दृष्टि से पकाने की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु तकनीक एवं प्रोटोकॉल विकसित करना। IPM (एकीकृत कीट प्रबंधन), IDM (एकीकृत रोग प्रबंधन) और INM (एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन) प्रोटोकॉल विकसित करना, जिससे उद्यानिक उत्पाद अवशेष एवं विष-मुक्त रहें। सुरक्षित एवं पौष्टिक उत्पादन उपलब्ध कराने के लिए जैविक उद्यानिकी का मानकीकरण एवं प्रोत्साहन। उच्च औषधीय मूल्य वाले औषधीय पौधों की पहचान, प्रदर्शन एवं लोकप्रियकरण। 	

प्रौद्योगिकी महाविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट

1. शिक्षण एवं तकनीकी पद विवरण						
शिक्षण स्टाफ			तकनीकी एवं सहायक स्टाफ			
स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	
71	32	39	-	-	-	
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का क्रियान्वयन (पिछले 3 वर्ष)						
<ul style="list-style-type: none"> लचीले प्रवेश/निकास और क्रेडिट-आधारित संरचना के साथ बहुविषयक यूजी कार्यक्रम शुरू किए गए। संयंत्र प्रशिक्षण, इंटरशिप और ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव (आरएडब्ल्यूई) मॉड्यूल के माध्यम से उद्योग अनुभव में वृद्धि हुई। छात्र गतिशीलता और विविध शिक्षण मार्गों के लिए अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (एबीसी) और च्वाइस-बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस) को अपनाया गया। नैतिकता, कल्याण, एनसीसी/एनएसएस और दीक्षारम्भ पर पाठ्यक्रमों के माध्यम से मूल्य-आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया गया। पाठ्यक्रम को एआई, रोबोटिक्स और नैनो बायोटेक जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों से समृद्ध किया जाएगा। 						
3. छठी डीन समिति का क्रियान्वयन एवं चुनौतियाँ						
<ul style="list-style-type: none"> यूजी पाठ्यक्रमों को सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और डिग्री जैसे लचीले प्रवेश/निकास विकल्पों के साथ नया रूप दिया गया है। व्यावहारिक शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है - छात्र अब इंटरशिप, RAWE और व्यावहारिक प्रशिक्षण में भाग ले रहे हैं। भविष्य के लिए तैयार रहने हेतु अब एआई, नवीकरणीय ऊर्जा और नैनोटेक जैसे विषय पाठ्यक्रम का हिस्सा बन गए हैं। एबीसी और सीबीसीएस जैसी प्रणालियाँ छात्रों को अधिक विकल्प और सहज शैक्षणिक गतिशीलता प्रदान करती हैं। 						
4. "विकसित भारत@2047" हेतु दृष्टिकोण						
<ul style="list-style-type: none"> राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप कृषि और तकनीकी शिक्षा में परिवर्तन लाने के लिए आधार के रूप में एनईपी 2020 को अपनाना। संरचित और संस्थान-विशिष्ट निष्पादन सुनिश्चित करने के लिए 2024 में एसवीपीयूएटी के लिए एनईपी कार्यान्वयन दिशा निर्देशों का निर्माण। लचीले, कौशल-आधारित शिक्षण मार्गों और प्रारंभिक कैरियर की तैयारी को बढ़ावा देने के लिए प्रमाणपत्र और डिप्लोमा कार्यक्रमों की शुरुआत। 						
5. छात्र नामांकन प्रवृत्ति (यूजी/पीजी/पीएच.डी- पिछले 3 वर्ष)						
वर्ष		छात्र संख्या				
2022-23		21				
2023-24		34				
2024-25		51				

6.	विदेशी छात्रों का नामांकन (SAARC/ Non-SAARC)			
	-			
7.	प्रकाशन (NAAS ≥ 6) – पिछले 3 वर्ष			
	नामांकित छात्र	2022-23	2023-24	2024-25
	NAAS ≥ 6 से ऊपर के प्रकाशन	02	08	04
8.	छात्र-शिक्षक अनुपात (एम.एस.सी./पीएच.डी.)			
	वर्ष	2022-23	2023-24	2024-25
	एम.टेक	1:1	2:1	1:4
	पीएचडी	1:1	1:1	32:3
9.	प्राकृतिक खेती पाठ्यक्रम / अनुसंधान की स्थिति			
	-			
10.	पेटेंट की संख्या (पिछले 3 वर्ष)			
	01			
11.	किसान स्तर पर अपनाया जाना एवं प्रभाव			
	-			
12.	छात्र प्लेसमेंट (पिछले 3 वर्ष)			
	वर्ष	छात्र प्लेसमेंट		
	2022-23	30		
	2023-24	26		
	2024-25	15		
13.	पेड इंटरशिप की संख्या			
	-			
14.	छात्र JRF / SRF की संख्या (पिछले 3 वर्ष)			
	• -			
15.	नवाचार केन्द्र/इन्क्यूबेशन/स्टार्ट-अप/उद्यमिता			
	• 02			
16.	शैक्षणिक सुदृढीकरण की भविष्य योजना			
	<ul style="list-style-type: none"> • शैक्षणिक उत्कृष्टता सुनिश्चित करने के लिए, कॉलेज निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करेगा। • एफडीपी, अनुसंधान प्रोत्साहन और वैश्विक सहयोग के माध्यम से संकाय विकास को बढ़ाया जाएगा। • उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करके और छात्र-नेतृत्व वाली परियोजनाओं, स्टार्ट-अप और हैकथॉन को प्रोत्साहित करके अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा दिया जाएगा। • स्मार्ट कक्षाओं, उन्नत प्रयोगशालाओं और डिजिटल संसाधनों तक बेहतर पहुंच के साथ बुनियादी ढांचे को उन्नत किया जाएगा। • इंटरशिप, वास्तविक दुनिया की परियोजनाओं और प्रायोजित प्रयोगशालाओं को सुविधाजनक बनाने के लिए मजबूत उद्योग संबंध स्थापित किए जाएंगे। 			

पोस्ट हार्वेस्ट टेक्नोलॉजी महाविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट

1.	शिक्षण एवं तकनीकी पद विवरण					
	शिक्षण स्टाफ			तकनीकी एवं सहायक स्टाफ		
	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
	49	17	32	-	-	-
2.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का क्रियान्वयन (पिछले 3 वर्ष)					
	<ul style="list-style-type: none"> राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का क्रियान्वयन शैक्षणिक सत्र 2024-25 से किया गया। 					
3.	छठी डीन समिति का क्रियान्वयन एवं चुनौतियाँ					
	<ul style="list-style-type: none"> कृषि विश्वविद्यालयों (SAUs) में अपनाया गया। ELP और RAWE कई संस्थानों में मानकीकृत। डिजिटल कक्षाएँ एवं ICT उपकरण प्रगति पर। ICAR का पाठ्यक्रम एवं अवसंरचना में सहयोग। 					
4.	"विकसित भारत@2047" हेतु दृष्टिकोण					
	<ul style="list-style-type: none"> कृषि विश्वविद्यालयों को नवाचार एवं अनुसंधान केंद्रों में बदलना तथा कृषि-उद्यमिता एवं कौशल विकास को बढ़ावा देना। जलवायु सहनशील एवं सतत कृषि पद्धतियों का विकास। उद्योग-अकादमिक संबंधों को सुदृढ़ करना। पाठ्यक्रम को वैश्विक कृषि शिक्षा मानकों के अनुरूप बनाना। 					
5.	छात्र नामांकन प्रवृत्ति (यूजी/पीजी/पीएच.डी- पिछले 3 वर्ष)					
	वर्ष	छात्र संख्या				
	2022-23	31				
	2023-24	38				
	2024-25	44				
6.	विदेशी छात्रों का नामांकन (SAARC/ Non-SAARC)					
	वर्ष	SAARC	Non-SAARC			
	2022-23	-	-			
	2023-24	-	-			
	2024-25	-	-			
7.	प्रकाशन (NAAS ≥6) – पिछले 3 वर्ष					
	वर्ष	प्रकाशन संख्या				
	2022-23	04				
	2023-24	12				
	2024-25	16				

8.	छात्र-शिक्षक अनुपात (एम.एस.सी./पीएच.डी.)
	-
9.	प्राकृतिक खेती पाठ्यक्रम / अनुसंधान की स्थिति
	-
10.	पेटेंट की संख्या (पिछले 3 वर्ष)
	-
11.	किसान स्तर पर अपनाया जाना एवं प्रभाव
	-
12.	छात्र प्लेसमेंट (पिछले 3 वर्ष)
	-
13.	पेड इंटरशिप की संख्या
	-
14.	छात्र JRF / SRF की संख्या (पिछले 3 वर्ष)
	-
15.	नवाचार केन्द्र/इन्क्यूबेशन/स्टार्ट-अप/उद्यमिता
	-
16.	शैक्षणिक सुदृढीकरण की भविष्य योजना
	<ul style="list-style-type: none"> ● NEP एवं उद्योग की आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यक्रम का संशोधन एवं नियमित अद्यतन। ● अंतर्विषयक एवं कौशल-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना। ● संकाय विकास को प्रशिक्षण एवं exposure कार्यक्रमों के माध्यम से सुदृढ करना। ● डिजिटल अवसंरचना एवं स्मार्ट कक्षाओं की सुविधाओं को बढ़ाना। ● प्रायोगिक अधिगम, RAWE और ELP मॉड्यूल का विस्तार। ● उभरते क्षेत्रों में उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना। ● राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अकादमिक सहयोग को प्रोत्साहन। ● छात्र अनुसंधान, नवाचार एवं स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देना।

पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट

1.	शिक्षण एवं तकनीकी पद विवरण					
	शिक्षण स्टाफ			तकनीकी एवं सहायक स्टाफ		
	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
	84	49	35	73	12	61
2.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का क्रियान्वयन (पिछले 3 वर्ष)					
	-					
3.	छठी डीन समिति का क्रियान्वयन एवं चुनौतियाँ					
	-					
4.	"विकसित भारत@2047" हेतु दृष्टिकोण					
	<ul style="list-style-type: none"> ● ग्रामीण और शहरी पशु स्वास्थ्य देखभाल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मजबूत नैदानिक, उद्यमशीलता और डिजिटल कौशल के साथ प्रतिस्पर्धी पशु चिकित्सा स्नातकों का विकास करना। ● ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म और स्मार्ट कक्षाओं के माध्यम से पशु चिकित्सा शिक्षा और विस्तार का डिजिटलीकरण। ● नियमित प्रशिक्षण, फार्म पर प्रदर्शन और मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयों द्वारा विश्वविद्यालय-किसान इंटरफेस को मजबूत करना। ● मोबाइल क्लिनिक, टेली -पशु चिकित्सा सेवाओं और निरंतर किसान प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से किसान-पशु चिकित्सा संबंधों को मजबूत करना। ● नीतिगत समर्थन, निगरानी और कौशल-आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से पशु कल्याण और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना। 					
5.	छात्र नामांकन प्रवृत्ति (यूजी/पीजी/पीएच.डी- पिछले 3 वर्ष)					
	वर्ष		छात्र संख्या			
	2022-23		102			
	2023-24		111			
	2024-25		129			
6.	विदेशी छात्रों का नामांकन (SAARC/ Non-SAARC)					
	-					
7.	प्रकाशन (NAAS \geq 6) – पिछले 3 वर्ष					
	नामांकित छात्र		2022-23	2023-24	2024-25	
	NAAS \geq 6 से ऊपर के प्रकाशन		05	07	03	
8.	छात्र-शिक्षक अनुपात (एम.एस.सी./पीएच.डी.)					
	-					
9.	प्राकृतिक खेती पाठ्यक्रम / अनुसंधान की स्थिति					
	-					
10.	पेटेंट की संख्या (पिछले 3 वर्ष)					
	-					
11.	किसान स्तर पर अपनाया जाना एवं प्रभाव					

	-								
12.	छात्र प्लेसमेंट (पिछले 3 वर्ष)								
	<table border="1"> <thead> <tr> <th>वर्ष</th> <th>छात्र प्लेसमेंट</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>2022-23</td> <td>06</td> </tr> <tr> <td>2023-24</td> <td>15</td> </tr> <tr> <td>2024-25</td> <td>13</td> </tr> </tbody> </table>	वर्ष	छात्र प्लेसमेंट	2022-23	06	2023-24	15	2024-25	13
वर्ष	छात्र प्लेसमेंट								
2022-23	06								
2023-24	15								
2024-25	13								
13.	पेड इंटरनेशिप की संख्या								
	-								
14.	छात्र JRF / SRF की संख्या (पिछले 3 वर्ष)								
	-								
15.	नवाचार केन्द्र/इन्क्यूबेशन/स्टार्ट-अप/उद्यमिता								
	-								
16.	शैक्षणिक सुदृढीकरण की भविष्य योजना								
	<ul style="list-style-type: none"> ● उभरते क्षेत्रों के साथ पाठ्यक्रम आधुनिकीकरण । ● यूजी/पीजी पाठ्यक्रम में वन हेल्थ, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और जलवायु-लचीले पशुपालन का एकीकरण। ● डिजिटल और सिमुलेशन-आधारित शिक्षा । ● उन्नत व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए आभासी विच्छेदन प्रयोगशालाओं और ई-लर्निंग मॉड्यूल की स्थापना। ● परिणाम-उन्मुख कौशल विकास । ● नैदानिक, उद्यमशीलता और संचार कौशल पर ध्यान केंद्रित करते हुए योग्यता-आधारित पशु चिकित्सा शिक्षा (सीबीवीई) का कार्यान्वयन । 								

जैव प्रौद्योगिकी महाविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट

1.	शिक्षण एवं तकनीकी पद विवरण					
	शिक्षण स्टाफ			तकनीकी एवं सहायक स्टाफ		
	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
	24	18	06	06	06	-
2.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का क्रियान्वयन (पिछले 3 वर्ष)					
	<ul style="list-style-type: none"> आईसीएआर की 6वीं डीन समिति की अनुशंसाओं के अनुसार जैव प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2024-25 से NEP लागू की गई। 					
3.	छठी डीन समिति का क्रियान्वयन एवं चुनौतियाँ					
	<ul style="list-style-type: none"> जैव प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में 6वीं डीन समिति की अनुशंसाओं को शैक्षणिक सत्र 2024-25 से सफलतापूर्वक लागू किया गया। 					
4.	"विकसित भारत@2047" हेतु दृष्टिकोण					
	<ul style="list-style-type: none"> NEP-2020 को अपनाना एवं SVPUAT हेतु कार्यान्वयन दिशा-निर्देश विकसित करना (2024)। प्रमाणपत्र एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की शुरुआत। बहु-प्रवेश एवं निकास विकल्पों के माध्यम से छात्र-हितैषी दृष्टिकोण अपनाना। 					
5.	छात्र नामांकन प्रवृत्ति (यूजी/पीजी/पीएच.डी- पिछले 3 वर्ष)					
	वर्ष	छात्र संख्या				
	2022-23	70				
	2023-24	84				
	2024-25	96				
6.	विदेशी छात्रों का नामांकन (SAARC/ Non-SAARC)					
	वर्ष	SAARC	Non-SAARC			
	2022-23	-	-			
	2023-24	-	-			
	2024-25	-	-			
7.	प्रकाशन (NAAS \geq6) – पिछले 3 वर्ष					
	वर्ष	प्रकाशन संख्या				
	2022-23	23				
	2023-24	11				
	2024-25	06				
8.	छात्र-शिक्षक अनुपात (एम.एस.सी./पीएच.डी.)					
	डिग्री कार्यक्रम	छात्र-शिक्षक अनुपात				
	एम.एस.सी.	0.9:1				
	पीएच.डी	0.3:1				
9.	प्राकृतिक खेती पाठ्यक्रम / अनुसंधान की स्थिति					

	-	
10.	पेटेंट की संख्या (पिछले 3 वर्ष)	
	वर्ष	संख्या
	2022-25	06
11.	किसान स्तर पर अपनाया जाना एवं प्रभाव	
	-	
12.	छात्र प्लेसमेंट (पिछले 3 वर्ष)	
	वर्ष	संख्या
	2022-23	23
	2023-24	21
	2024-25	15
13.	पेड इंटरशिप की संख्या	
	-	
14.	छात्र JRF / SRF की संख्या (पिछले 3 वर्ष)	
	-	
15.	नवाचार केन्द्र/इन्क्यूबेशन/स्टार्ट-अप/उद्यमिता	
	01	
16.	शैक्षणिक सुदृढीकरण की भविष्य योजना	
	<ul style="list-style-type: none"> ● केंद्रीय यंत्रण सुविधा की स्थापना (24 घंटे विद्युत बैकअप सहित) । ● शोध सुदृढीकरण हेतु CSIR/UGC/ICAR एवं JRF अभ्यर्थियों को पीएचडी में प्रत्यक्ष प्रवेश की सुविधा । ● जीनोम एडिटिंग प्रयोगशाला की स्थापना । 	

गन्ना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय (नवीन) की प्रगति रिपोर्ट

1.	शिक्षण एवं तकनीकी पद विवरण					
	शिक्षण स्टाफ			तकनीकी एवं सहायक स्टाफ		
	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
	12	-	-	-	-	-
2.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का क्रियान्वयन (पिछले 3 वर्ष)					
	-					
3.	छठी डीन समिति का क्रियान्वयन एवं चुनौतियाँ					
	-					
4.	"विकसित भारत@2047" हेतु दृष्टिकोण					
	-					
5.	छात्र नामांकन प्रवृत्ति (यूजी/पीजी/पीएच.डी- पिछले 3 वर्ष)					
	वर्ष	छात्र संख्या				
	2023-24	11				
	2024-25	36				
6.	विदेशी छात्रों का नामांकन (SAARC/ Non-SAARC)					
	-					
7.	प्रकाशन (NAAS \geq 6) – पिछले 3 वर्ष					
	-					
8.	छात्र-शिक्षक अनुपात (एम.एस.सी./पीएच.डी.)					
	-					
9.	प्राकृतिक खेती पाठ्यक्रम / अनुसंधान की स्थिति					
	<ul style="list-style-type: none"> ● लागू किया जा रहा है । 					
10.	पेटेंट की संख्या (पिछले 3 वर्ष)					
	-					
11.	किसान स्तर पर अपनाया जाना एवं प्रभाव					
	-					
12.	छात्र प्लेसमेंट (पिछले 3 वर्ष)					
	-					
13.	पेड इंटरशिप की संख्या					
	-					
14.	छात्र JRF / SRF की संख्या (पिछले 3 वर्ष)					
	-					
15.	नवाचार केन्द्र/इन्क्यूबेशन/स्टार्ट-अप/उद्यमिता					
	-					
16.	शैक्षणिक सुदृढीकरण की भविष्य योजना					
	-					

निदेशक प्रशासन एवं निगरानी (डीएएम) की प्रगति रिपोर्ट

1.	शिक्षण एवं तकनीकी पद विवरण					
	शिक्षण स्टाफ			तकनीकी एवं सहायक स्टाफ		
	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
	329	171	158	138	81	57
2.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का क्रियान्वयन (पिछले 3 वर्ष)					
	-					
3.	छठी डीन समिति का क्रियान्वयन एवं चुनौतियाँ					
	-					
4.	"विकसित भारत@2047" हेतु दृष्टिकोण					
	-					
5.	छात्र नामांकन प्रवृत्ति (यूजी/पीजी/पीएच.डी- पिछले 3 वर्ष)					
	-					
6.	विदेशी छात्रों का नामांकन (SAARC/ Non-SAARC)					
	-					
7.	प्रकाशन (NAAS ≥ 6) – पिछले 3 वर्ष					
	-					
8.	छात्र-शिक्षक अनुपात (एम.एस.सी./पीएच.डी.)					
	-					
9.	प्राकृतिक खेती पाठ्यक्रम / अनुसंधान की स्थिति					
	-					
10.	पेटेंट की संख्या (पिछले 3 वर्ष)					
	-					
11.	किसान स्तर पर अपनाया जाना एवं प्रभाव					
	-					
12.	छात्र प्लेसमेंट (पिछले 3 वर्ष)					
	-					
13.	पेड इंटर्नशिप की संख्या					
	-					
14.	छात्र JRF / SRF की संख्या (पिछले 3 वर्ष)					
	-					
15.	नवाचार केन्द्र/इन्क्यूबेशन/स्टार्ट-अप/उद्यमिता					
	-					
16.	शैक्षणिक सुदृढ़ीकरण की भविष्य योजना					
	-					

आधुनिक फार्म की स्थापना: प्राकृतिक खेती की प्रगति रिपोर्ट

- परियोजना का नाम : आधुनिक फार्म की स्थापना: प्राकृतिक खेती
- वर्ष: 2025
- कुल स्वीकृत बजट: 5.55 लाख रूपये, आईसीएआर, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित
- जारी बजट: 2.80 लाख रूपये- I किस्त
- कार्य प्रक्रियाधीन
- खरीफ में बोई जाने वाली फसलें –बाजरा+रागी+दलहन या सब्जी

अवलोकन:

1. तकनीकी महाविद्यालय द्वारा बहुत ही सराहनीय एवं गुणवत्तापूर्ण कार्य किये जा रहे हैं।
2. अधिकांश प्राध्यापक शोध कार्यों में संलग्न नहीं हैं; उन्हें केवल पठ पाठन के अलावा बल्कि शोध गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए।
3. जो प्राध्यापक शोध कार्यों में संलग्न हैं, वे वित्त पोषण एजेंसियों को उपयोगिता प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने में विलंब कर रहे हैं, जिसके कारण वित्त पोषण एजेंसियों द्वारा धनराशि अवमुक्त करने में कठिनाइयाँ उत्पन्न हो रही हैं तथा परियोजनाएँ विलंबित हो रही हैं।
4. विश्वविद्यालय के पास अल्पकालिक, मध्यकालिक और दीर्घकालिक स्तर पर कोई स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं है। इस विषय पर विश्वविद्यालय को ठोस कार्य करने की आवश्यकता है।
5. शोध की गुणवत्ता असंतोषजनक पाई गई है, जिसके परिणामस्वरूप अधिकांश प्रकाशन निम्न-गुणवत्ता वाली शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रहे हैं।
6. वैज्ञानिकों द्वारा उत्पादों/प्रौद्योगिकियों के लिए बहुत कम पेटेंट दाखिल किए जा रहे हैं, जो चिंता का विषय है।
7. उत्पादों/प्रौद्योगिकियों के लाइसेंसिंग और व्यावसायीकरण के अभाव के कारण अधिकांश वैज्ञानिक अनभिज्ञ हैं, जिससे विश्वविद्यालय को बड़ी वित्तीय हानि हो रही है।

उपकार टीम के सुझाव:

1. नए और युवा प्राध्यापकों को उच्च-गुणवत्ता वाले शोध प्रस्ताव तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके लिए उन्हें वैज्ञानिक लेखन और प्रस्ताव लेखन संबंधी विशेष प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है।
2. पेटेंट दाखिल करने तथा उसके लाइसेंसिंग/व्यावसायीकरण हेतु उपयुक्त प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए। यह पहल उत्पादक तकनीकों को किसानों तक पहुँचाने में सहायक होगी। साथ ही, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए एक सुदृढ़ और सुव्यवस्थित तंत्र स्थापित किया जाना चाहिए।
3. छात्रों और प्राध्यापकों में उद्यमशीलता की सोच विकसित करने के लिए ठोस पहल की जानी चाहिए।
4. शैक्षणिक परिदृश्य को मजबूत बनाने के लिए एक दीर्घकालिक और व्यापक दृष्टिकोण आवश्यक है, जो तात्कालिक चुनौतियों से आगे बढ़कर रणनीतिक योजना और सतत विकास पर केंद्रित हो।
5. प्रत्येक महाविद्यालयों को आवश्यकता-आधारित शोध हेतु प्रमुख क्षेत्रों की पहचान करने और उन क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
6. विश्वविद्यालय को एक व्यापक मूल्यांकन ढाँचे को अपनाने पर विचार करना चाहिए जो शोध योगदान की गुणवत्ता, गहराई और सामाजिक प्रभाव को पहचानते हों, और एक ऐसी शोध संस्कृति को बढ़ावा दें जो केवल प्रकाशन संख्या तक ही सीमित न हो।
7. शैक्षणिक उत्कृष्टता, अंतर सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को बढ़ावा देने और वैश्विक शोध परिदृश्य को समृद्ध बनाने के लिए शोध में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
8. शिक्षकों और छात्रों के लिए संरचनात्मक प्रतिपुष्टि पद्धति और अनुशंधान केंद्रों और विभागों की समय-समय पर समीक्षा करना।
9. शोधपत्र उच्च प्रभाव कारक वाली पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाना चाहिए।
10. नवयुवा अध्यापकों को प्रति माह किसी एक नई तकनीक या नव-अन्वेषित विषय पर व्याख्यान देना अनिवार्य किया जाना चाहिए।



स.व.प.कृ.प्रौ.वि.वि. मोदीपुरम, मेरठ के वैज्ञानिकों के साथ उपकार टीम के सदस्यों द्वारा कृषि शिक्षा शोध एवं प्रसार पर चर्चा



स. व. प. कृ. प्रौ. वि. वि., मेरठ के वैज्ञानिकों के साथ उपकार टीम के सदस्यों द्वारा तकनीकी पर चर्चा





उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद

द्वारा

सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ

का भ्रमण करने और समीक्षा के उपरान्त की

कार्यवृत्त

अनुसंधान प्रगति रिपोर्ट



माननीय कुलपति, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ एवं उपकार सदस्य

सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ के दौरे की कार्यवृत्त

4-5 अगस्त 2025 को, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद [उपकार], लखनऊ के निम्नलिखित सदस्यों ने सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने परिसर और संबद्ध कृषि विज्ञान केंद्र [केवीके] में पिछले तीन वर्षों [2022-2025] के अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार गतिविधियों की समीक्षा की।

1. डॉ. संजय सिंह, महानिदेशक
2. डॉ. राजर्षि कुमार गौड़, उप महानिदेशक [अनु. परि. प्र. और सम.]
3. डॉ. परमेश्वर सिंह, उप महानिदेशक [कृ. शि. और प्रौ. ह.]

1	वित्त पोषित परियोजनाओं की संख्या:		75																												
	ACRIP	ICAR	U.P.C.A.R.	Projects from other agencies (RKVY, SADP, UPCST, DBT, DST, Central & State Govt)	International Projects	Non-Plan Projects																									
	6	8	4	42	-	15																									
	परियोजना की कुल लागत (रुपये में): 8104.89 Lakhs																														
	ACRIP	ICAR	U.P.C.A.R.	Projects from other agencies	International Projects	Non-Plan Projects																									
	55.20	1220.73	127.18	6547.31	-	154.47																									
2	<p>प्रमुख शोध उपलब्धियाँ:</p> <ul style="list-style-type: none"> ● भारत की पहली गैर-जीएम शाकनाशी-सहिष्णु [non GM Herbicide tolerant] बासमती चावल किस्मों, डीएसआर पूसा बासमती 1979 और पूसा बासमती 1985 का परीक्षण केंद्र पर किया गया है। ● सुमितोमो जैव-उर्वरक लट्टू [Sumitomo bio-fertilizer Lattu] (ह्यूमिक एसिड और समुद्री खरपतवार अर्क) की प्रभावकारिता और मात्रा का परीक्षण और मात्रा निर्धारित की गई है। ● चावल जर्मप्लाज्म का रखरखाव: केंद्र में 681 चावल जर्मप्लाज्म का रखरखाव किया गया है। ● रबी 2022-23 से 2024-25 के दौरान कुल 41 समन्वित परीक्षण (गेहूं-22 और जौ-19) सफलतापूर्वक किए गए और इन सभी परीक्षणों के आंकड़ों की रिपोर्ट की गई। <p>विभिन्न परीक्षणों में परीक्षण के लिए प्रस्तुत प्रविष्टियाँ नीचे दी गई तालिका में दिए गए विवरण के अनुसार हैं:</p> <table border="1"> <thead> <tr> <th>Year/Trial</th> <th>IPPSN</th> <th>IVTs</th> <th>AVTs</th> <th>SVTs</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>2022-23</td> <td>10</td> <td>03</td> <td>-</td> <td>-</td> </tr> <tr> <td>2023-24</td> <td>10</td> <td>03</td> <td>-</td> <td>3</td> </tr> <tr> <td>2024-25</td> <td>10</td> <td>04</td> <td>01</td> <td>3+1 (new)</td> </tr> <tr> <td>Total</td> <td>30</td> <td>10</td> <td>01</td> <td>04</td> </tr> </tbody> </table> <ul style="list-style-type: none"> ● सभी केंद्रों पर जीवामृत, घनमृत और जैव कीटनाशक तैयार किए जा रहे हैं। ● मवेशियों में सुपर ओव्यूलेशन के लिए एफएसएच एल्यूटिंग चिटोसिन गोल्ड नैनोसस्पेंशन विकसित किया 						Year/Trial	IPPSN	IVTs	AVTs	SVTs	2022-23	10	03	-	-	2023-24	10	03	-	3	2024-25	10	04	01	3+1 (new)	Total	30	10	01	04
Year/Trial	IPPSN	IVTs	AVTs	SVTs																											
2022-23	10	03	-	-																											
2023-24	10	03	-	3																											
2024-25	10	04	01	3+1 (new)																											
Total	30	10	01	04																											

गया है।

- डेयरी प्रसंस्करण संयंत्र और गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला का निर्माण पूरा हो चुका है और चार प्रयोगशाला उपकरण खरीदे जा चुके हैं।
- वित्तीय वर्ष 2024-25 में लक्षित महिला लाभार्थियों पर व्यापक सामाजिक-आर्थिक आधार रेखा सर्वेक्षण किया गया। आईएफपीआरआई द्वारा विकसित कृषि में महिला सशक्तिकरण सूचकांक WEAI उपकरण का उपयोग करके कृषि और संबद्ध क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण की स्थिति, वर्तमान कौशल और प्रथाओं, आजीविका के स्रोत आदि का आकलन किया गया। चयनित गाँव वलीदपुर (दौराला ब्लॉक), लिसोरा (खतौली ब्लॉक) और भोपा (मुजफ्फरनगर ब्लॉक) हैं।
- उर्वरक प्रबंधन से गन्ना उत्पादकता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। पोटेशियम का प्रयोग बेहतर गुणवत्ता के साथ उच्च उत्पादकता के लिए प्रभावी पाया गया क्योंकि पोटेशियम की कमी से उपज में उल्लेखनीय कमी आती है।
- अंतिम उपयोगकर्ताओं तक पशु चिकित्सा टेलीमेडिसिन सेवाएँ पहुँचाने के उद्देश्य से सॉफ्टवेयर का विकास और परीक्षण वर्तमान में प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त, पशु स्वास्थ्य पेशेवरों और किसानों की क्षमता निर्माण के लिए साहित्य और प्रशिक्षण सामग्री विकसित की जा रही है।
- पारंपरिक FSH आधारित भ्रूण पुनर्प्राप्ति की प्रभावशीलता प्रति पशु प्रति सत्र 6.5 कॉर्पस ल्यूटियम, 5.28 भ्रूण और 3.5 व्यवहार्य भ्रूण पाई गई।
- हार्मोन rhFSH (750 IU), FSH (250 माइक्रोग्राम) rhFSH (450IU) का चिटोसन गोल्ड नैनो सस्पेंशन, साहीवाल गायों में सुपरओव्यूलेशन प्रेरित करने में समान रूप से प्रभावी पाया गया, जिनकी औसत कॉर्पस ल्यूटियम संख्या क्रमशः 6.25 ± 0.39 , 6.66 ± 0.52 और 6.5 ± 0.43 थी।
- मोबाइल पशु चिकित्सा क्लिनिक (एम्बुलेंस) की सफलतापूर्वक स्थापना की गई। यह मोबाइल इकाई अल्ट्रासाउंड स्कैनिंग मशीन और रक्त एवं मल परीक्षण हेतु आवश्यक प्राथमिक नैदानिक सुविधाओं से सुसज्जित है, जिससे बांझपन का सटीक निदान और पशुओं के लिए अधिक प्रभावी उपचार प्रोटोकॉल संभव हो सके।
- किसानों के घर-घर पशु स्वास्थ्य शिविर नियमित रूप से आयोजित किए जाते थे, जिनमें पशु चिकित्सा विज्ञान के विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ शामिल होते थे, जिनमें शामिल हैं: पशु चिकित्सा, पशु शल्य चिकित्सा और रेडियोलॉजी, पशु स्त्री रोग और प्रसूति, पशु रोग विज्ञान, पशु परजीवी विज्ञान। इन बहु-विषयक शिविरों ने पशुधन आबादी को व्यापक स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान कीं। परियोजना के दौरान, 2,797 किसानों के 10,939 पशुओं की जाँच की गई और उनका उपचार किया गया।
- इन क्षेत्रीय दौरों के दौरान एकत्र किए गए नमूनों और आँकड़ों को व्यवस्थित रूप से रिकॉर्ड और विश्लेषण किया गया। इस जानकारी को संबंधित विभागों की शोध परियोजनाओं में एकीकृत किया गया, जिससे शैक्षणिक परिणामों में महत्वपूर्ण योगदान मिला। इसके अलावा, निरंतर डेटा संग्रह ने एक महामारी विज्ञान डेटाबेस के विकास को सक्षम किया, जो भविष्य में पशुधन स्वास्थ्य नियोजन और प्रभावी रोग

	<p>नियंत्रण रणनीतियों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।</p> <ul style="list-style-type: none"> • रबी 2022-23 से 2024-25 के दौरान भारतीय सरसों पर कुल 06 समन्वित परीक्षण सफलतापूर्वक किए गए और इन सभी परीक्षणों के आंकड़ों की रिपोर्ट तैयार की गई। इन परीक्षणों के आंकड़ों को आईसीएआर-आईआईएमआर भरतपुर [ICAR-IIMR, Bharatpur] द्वारा प्रकाशित वर्ष 2022-23, 2023-24 और 2024-25 की वार्षिक रिपोर्ट (फसल सुधार) में शामिल किया गया।
4	<p>नया अवलोकन</p> <ul style="list-style-type: none"> • <i>Lantana camara</i> से प्राप्त हरे ZnO-नैनोकण की गेहूँ पर परीक्षण की गई, जो कवक नियंत्रण और अंकुरण एवं वृद्धि में सहायक पाया गया। • पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में उगाई जाने वाली प्रमुख सब्जी फसलों (फूलगोभी (<i>Brassica oleracea</i> var. botrytis), भिंडी (<i>Abelmoschus esculentus</i>), टमाटर (<i>Solanum lycopersicum</i>), Brinjal (<i>Solanum melongena</i>), आलू (<i>Solanum tuberosum</i>), पालक (<i>Spinacia oleracea</i>) में कीटनाशक अवशेषों और उनकी उपस्थिति से जुड़े स्वास्थ्य जोखिमों का आकलन। • मुजफ्फरनगर के विभिन्न क्षेत्रों से एकत्रित विभिन्न सब्जी फसलों में कार्बेन्डाजिम, एसीफेट, क्लोरपाइरीफॉस, साइपरमेथ्रिन, फिप्रोनिल, एंडोसल्फान, प्रोपिकोनाज़ोल और डाइक्लोरवोस जैसे कीटनाशक अवशेषों के स्तर की GC/LC-MS का उपयोग करके जाँच। • <i>Holotrichia serrata</i> (फैब्रिकियस) पर <i>Metarhizium anisopliae</i> का जैवपरीक्षण। • <i>Holotrichia serrata</i> पर कवक का रोगजनन। (फैब्रिकियस)। • AMR का पता लगाने के लिए FTIR आधारित मॉड्यूल • FMD प्रकोप के लंबे अंतराल के बाद serotype A की रिपोर्ट
5	<p>नवीन नवाचार</p> <ul style="list-style-type: none"> • विभिन्न औषधीय मशरूम की उत्पादन तकनीक • मछली के चारे में कम लागत वाली, अपरंपरागत सामग्री (चने की भूसी और शहतूत के पत्ते) का उपयोग। • मवेशियों में सुपरओव्यूलेशन के लिए FSH eluting chitosan gold nanosuspension विकसित किया गया। • <i>Lantana camara</i> से प्राप्त हरे जिंक ऑक्साइड नैनोकण, जिंक ऑक्साइड-चिटोसिन और जिंक ऑक्साइड-चिटोसिन-मैन्कोजेब नैनो-संयुग्म को nano-fungicide के रूप में संश्लेषित और अभिलक्षित किया गया। • चुकंदर और गेंदे से प्राकृतिक सुगंधित गुलाल पहली बार विकसित किया गया है। • पारंपरिक कीटनाशकों पर अपनी निर्भरता कम करने के इच्छुक किसानों के लिए वैकल्पिक तरीकों और टिकाऊ कृषि पद्धतियों की खोज करना जो व्यवहार्य विकल्प के रूप में काम कर सकें।
6	<p>Application Potential:</p> <p>उल्लिखित परियोजना की अनुप्रयोग क्षमता के बारे में कोई स्पष्टीकरण</p>

	आवेदन क्षमता:	नहीं दिया गया	
	Long Term दीर्घकालिक	14 - Projects	
	Mid-term मध्यावधि	46 - Projects	
	short term अल्पकालिक	15 - Projects	
7	PhDs Produced no: 25	Technical Personnel trained:246	Other personnel trained: 527
10	<p>पेटेंट और उसके व्यावसायीकरण की स्थिति:</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. पशु Anaplasmosis की रोकथाम और उपचार के लिए उपयोगी एक पॉलीहर्बल तैयारी आवेदन संख्या 202211024162 दिनांक 25/04/2022 2. Bovine Brucellosis की रोकथाम और उपचार के लिए उपयोगी एक पॉलीहर्बल तैयारी संख्या 20221 1024163 दिनांक 25/04/2022 3. फसलों में Helicoverpa Armigera संक्रमण के जैविक नियंत्रण के लिए नवीन मेटारिज़ियम एनीस्प्लिया स्ट्रेन (एसवीपीयूएटी)। आवेदन संख्या 202311052033 दिनांक 02/08/2023 4. पत्तागोभी के कीड़े, Hellula Undalis के आनुवंशिक रहस्यों को उजागर करना: Transcriptome sequencing, कार्यात्मक विश्लेषण और कीट प्रबंधन अनुप्रयोग आवेदन संख्या 202311071155 दिनांक 18/10/23 5. हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा के लिए व्यापक ट्रांसक्रिप्टोमिक-संचालित स्थायी कीट प्रबंधन आवेदन संख्या 202311071154 दिनांक 18/10/23 6. स्थायी कीट प्रबंधन के लिए आणविक गतिशीलता। आवेदन संख्या 202411000806 दिनांक 04/01/2024 7. पत्तागोभी में Hellula undalis के लक्षित नियंत्रण हेतु मेटाराइज़ियम एनिसोप्लाई-आधारित जैव-कीटनाशक संरचना। आवेदन संख्या 202411003667 दिनांक 18/01/2024 8. "पारंपरिक एलोपैथिक जीवाणुरोधी एजेंटों की रोगाणुरोधी प्रभावकारिता बढ़ाने हेतु सहक्रियात्मक हर्बल सहायक" के लिए अनुमोदन प्रक्रिया में। 		
11	<p>उत्पाद/प्रक्रिया विकास एवं व्यावसायीकरण की स्थिति:</p> <ul style="list-style-type: none"> • Lantana camera, Azadirachtaindica, Parthenium और Sonchusasper से संश्लेषित हरा जिंक ऑक्साइड नैनोकण। • Zinc oxide-Chitosan-Mancozeb Nanoconjugate संश्लेषण • पारंपरिक एलोपैथिक जीवाणुरोधी एजेंटों की रोगाणुरोधी प्रभावकारिता बढ़ाने के लिए सहक्रियात्मक हर्बल सहायक। पेटेंट आवेदन प्रक्रियाधीन है। 		
12	<p>नवप्रवर्तन केंद्र/इन्क्यूबेशन केंद्र/स्टार्ट-अप/उद्यमिता</p> <ul style="list-style-type: none"> • गौशाला का विकास और गाय आधारित प्राकृतिक खेती के लिए जीवामृत, घनमृत और जैविक कीटनाशक तैयार करना • महिला प्रौद्योगिकी पार्क (WTP) का विकास 		

उपकार टीम अवलोकन:

1. अधिकांश शोध कार्यो की प्रगति बहुत धीमी है। प्रधान अन्वेषकों को वित्त पोषण एजेंसियों को उपयोगिता प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने में समस्या आ रही है, जिससे वित्त पोषण एजेंसियों से धनराशि अवमुक्त होने में विलम्ब हो रहा है।
2. समिति द्वारा वित्त कार्यालय से संपर्क करने का प्रयास किया गया, लेकिन विभाग से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ।
3. यद्यपि शोध वैज्ञानिक अपने उत्पादों/टेक्नोलॉजी के लिए पेटेंट दाखिल कर रहे हैं, लेकिन वे उन उत्पादों/टेक्नोलॉजी के लाइसेंस और व्यावसायीकरण से अनभिज्ञ हैं। यह विश्वविद्यालय के लिए एक बड़ा वित्तीय हानि है। निजी कंपनियाँ इन किस्मों/टेक्नोलॉजी को अपनाकर योजनाओं से धन कमा रही हैं।
4. विश्वविद्यालय के पास दीर्घकालिक, मध्यम अवधि और अल्पकालिक के बारे में कोई स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं है; उन्हें इस पहलू पर कार्य करने की आवश्यकता है।
5. शोध की प्रकाशन की गुणवत्ता बहुत निम्न स्तर की है। अधिकांश प्रकाशन निम्न गुणवत्ता वाली पत्रिकाएँ हैं।
6. पिछले पाँच वर्षों में अनाज/दलहन/तिलहन में कुछ ही किस्में जारी या अधिसूचित की गई हैं, लेकिन बागवानी और सब्जियों की एक भी किस्म जारी या अधिसूचित नहीं की गई।
7. पुरानी और महत्वपूर्ण किस्मों के संरक्षण में कोई संतोषजनक कार्य नहीं किया गया।

उपकार टीम के सुझाव/अनुशंसाएँ:

1. विश्वविद्यालय में अंतःविषय सहयोग को बढ़ावा देने से समग्र शोध परिणामों में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।
2. नए और युवा प्राध्यापकों को अच्छे प्रस्ताव लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्हें वैज्ञानिक लेखन या प्रस्ताव लेखन पर कुछ प्रशिक्षण की आवश्यकता है।
3. पेटेंट दाखिल और उसके लाइसेंसिंग/व्यावसायीकरण के लिए उचित प्रशिक्षण होना चाहिए; इससे उन्हें उत्पाद/टेक्नोलॉजी को किसानों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए एक सुव्यवस्थित प्रणाली स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है।
4. छात्रों और प्राध्यापकों में उद्यमशीलता की मानसिकता विकसित करने के लिए पहल की जानी चाहिए।
5. विश्वविद्यालय को एक व्यापक मूल्यांकन ढाँचे को अपनाने पर विचार करना चाहिए जो शोध योगदान की गुणवत्ता, गहराई और सामाजिक प्रभाव को पहचानते हों, और एक ऐसी शोध संस्कृति को बढ़ावा दें जो केवल प्रकाशन संख्या तक ही सीमित न हो।
6. शोध पारिस्थितिकी तंत्र में सतत योगदान को मान्यता देने और प्रोत्साहित करने के लिए शोध-उन्मुख भत्ते शुरू किए गए हैं। ये प्रोत्साहन सामूहिक रूप से एक सहायक वातावरण का निर्माण करते हैं, जो शिक्षकों को अपने शोध प्रयासों को प्राथमिकता देने और उनमें उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं।
7. शैक्षणिक उत्कृष्टता, अंतर-सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को बढ़ावा देने और वैश्विक शोध परिदृश्य को समृद्ध बनाने के लिए शोध में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

8. शिक्षकों और छात्रों के लिए संरचनात्मक प्रतिपुष्टि तंत्र और अनुसंधान केंद्रों और विभागों की समय-समय पर समीक्षा करना।
9. शोध परिदृश्य को सुदृढ़ करने के लिए, एक व्यापक दीर्घकालिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना आवश्यक है जो तात्कालिक चुनौतियों से परे हो, जिसमें रणनीतिक योजना और विकास शामिल हो।
10. प्रत्येक विश्वविद्यालय को आवश्यकता-आधारित शोध के लिए विशिष्ट प्रमुख क्षेत्रों की पहचान करने के लिए प्रोत्साहित करना, विशिष्ट विशेषज्ञता को बढ़ावा देने और सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक रणनीतिक अनिवार्यता है।
11. शोध के लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने के लिए प्रेस विज्ञप्ति, सोशल मीडिया अभियान और इंटरैक्टिव प्लेटफॉर्म जैसे विविध माध्यमों का उपयोग करना।
12. उत्तर प्रदेश के कृषि उत्पादन आयुक्त के अनुसार, उपकार को निर्देश दिया गया कि उपकार प्रत्येक छह महीने में राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार की समीक्षा और निगरानी करेगा।

अनुसंधान निदेशालय में परियोजना समीक्षा बैठक



कृषि महाविद्यालय का दौरा



बासमती गुणवत्ता प्रयोगशाला



नेमाटोलॉजी [Nematology] लैब, पादप रोग विज्ञान विभाग



आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग की आणविक प्रयोगशाला



बागवानी महाविद्यालय में ऊतक संवर्धन प्रयोगशाला



जैव प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में हाइड्रोपोनिक इकाई

पोस्ट हार्वेस्ट एवं टेक्नोलॉजी कॉलेज में बाजरा प्रसंस्करण इकाई



प्रौद्योगिकी महाविद्यालय



मोबाइल पशु चिकित्सा एम्बुलेंस सुविधाओं की प्रगति की समीक्षा

विश्वविद्यालय बिक्री काउंटर



कैलिफ़ोर्निया केज यूनिट का दौरा

पोल्ट्री रिसर्च एंड ट्रेनिंग सेंटर (PRTC) में कैलिफ़ोर्निया केज यूनिट





पोल्ट्री फीड यूनिट का दौरा



आईएलएफसी-II इकाई में भेड़ और बकरी इकाई



पादप सूत्रकृमि [Nematode] अनुसंधान खंड



कृषि की नई तकनीक को किसानों तक पहुंचाएं : संजय सिंह

मेरठ, 4 अगस्त (देशवक्त्र)। सरदार चल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में उत्तर प्रदेश एग्रीकल्चर रिसर्च कॉर्पोरेशन के डायरेक्टर जनरल डॉक्टर संजय सिंह ने विश्वविद्यालय में चल रही 59 परियोजनाओं की समीक्षा की इस दौरान उनके साथ डी डी जी उपकार राज शशि गौर एवं डॉक्टर परमिंदर सिंह भी उपस्थित रहे। कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर के.के. सिंह के कुशल निरीक्षण में विगत 3 वर्षों में विश्वविद्यालय का कृषि शिक्षा एवं शोध एवं प्रसार के क्षेत्र में चौखुड़ी विकास हुआ है।

■ किसानों की समस्याओं को छल्लाने में रखते हुए परियोजनाओं की जारी चाहिए तैयार

इसका मतलब है की कृषि विश्वविद्यालय अपनी तकनीकी ज्ञान को किसानों के खेत खलियान तक पहुंचाने में सफल हो सका है। उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद के डायरेक्टर जनरल डॉक्टर संजय सिंह ने कहा कि आज इस बात की आवश्यकता है कि हम नई एजुकेशन पॉलिसी का एडिप्शन करें और कृषि की नई तकनीक को किसानों तक पहुंचाएं जिससे इन तकनीकों के माध्यम से किसानों की खेतों में नई फसल पैदा हो सके और उनकी आय में बढ़ोतरी हो इस



तक का प्रयास हर वैज्ञानिक को करना होगा उन्होंने कहा की अच्छी और गुणवत्ता युक्त परियोजनाएं बनाकर विश्वविद्यालय द्वारा भेजी जाएगी तो उत्तर प्रदेश सरकार उन परियोजनाओं को वित्तीय सहायता देने के लिए तैयार है उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए परियोजनाएं तैयार की जानी चाहिए और परियोजनाओं को तैयार करते समय इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि उनके परिणाम

श्लेषजनक हो और किसानों के लिए उपयोगी हो उन्होंने वैज्ञानिकों से अपेक्षाएं किया कि वह उभरती हुई प्रजातियों को विकसित करने पर ध्यान दें डॉ. संजय सिंह ने अधिक से अधिक शोध पर प्रकाशित करने और पेटेंट करने के लिए विज्ञानियों को आगे आने की बात कही कृषि विश्वविद्यालय में छात्रों के फ्लेसमेट के बढ़ने पर उन्होंने खुशी व्यक्त करते हुए कहा इससे छात्रों को तो लाभ मिल ही रहा है साथ ही

विश्वविद्यालय का भी प्रदेश में अग्रणी नाम हो रहा है क्योंकि जब छात्रों का फ्लेसमेट बढ़ेगा उससे विश्वविद्यालय की रेटिंग में भी इजाजत होगा। उप महानिदेशक डॉक्टर राज शशि गौर ने कहा कि विज्ञान को बायोटेक्नोलॉजी की नई तकनीक को ध्यान में रखते हुए परियोजनाएं बनानी चाहिए जिससे उनका सीधा लाभ जल्द से जल्द किसानों तक पहुंचा जा सके उन महानिदेशक डॉक्टर परमिंदर सिंह ने विज्ञानको से सुरुवात करते हुए कहा शोध कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए और अच्छे शोध जनरल में शोध पत्रों का प्रकाशन एवं पेटेंट का प्रत्येक वैज्ञानिक को प्रयास करना होगा तभी गुणवत्ता युक्त शोध किया जा सकेगा।

उन्नतशील प्रजातियों के विकास पर ध्यान दें

कृषि विश्वविद्यालय में डायरेक्टर जनरल उपकार परियोजनाओं की समीक्षा

ग्रीन इंडिया

मेरठ। सरदार चल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में उत्तर प्रदेश एग्रीकल्चर रिसर्च कॉर्पोरेशन के डायरेक्टर जनरल डॉक्टर संजय सिंह ने विधि में चल रही 59 परियोजनाओं की समीक्षा की इस दौरान उनके साथ डी डी जी उपकार राज शशि गौर एवं डॉक्टर परमिंदर सिंह भी उपस्थित रहे।

कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डा. के.के. सिंह के कुशल निरीक्षण में विगत 3 वर्षों में विश्वविद्यालय का कृषि शिक्षा एवं शोध एवं प्रसार के क्षेत्र में चौखुड़ी विकास हुआ है। इसी का नतीजा है की कृषि विश्वविद्यालय अपनी तकनीकी ज्ञान को किसानों के



खेत खलियान तक पहुंचाने में सफल हो सका है।

उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद के डायरेक्टर जनरल डा. संजय सिंह ने कहा कि आज इस बात की आवश्यकता है कि हम नई एजुकेशन पॉलिसी का एडिप्शन करें और कृषि की नई तकनीक को किसानों तक पहुंचाएं जिससे इन तकनीकों के माध्यम से किसानों की

खेतों में नई फसल पैदा हो सके और उनकी आय में बढ़ोतरी हो। इस तरह का प्रयास हर वैज्ञानिक को करना होगा। अच्छी और गुणवत्ता युक्त परियोजनाएं बनाकर विधि द्वारा भेजी जाएगी तो उत्तर प्रदेश सरकार उन परियोजनाओं को वित्तीय सहायता देने के लिए तैयार है। उत्तर प्रदेश के किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए परियोजनाएं तैयार

की जानी चाहिए और परियोजनाओं को तैयार करते समय इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि उनके परिणाम संतोषजनक हो और किसानों के लिए उपयोगी हो। उन्होंने वैज्ञानिकों से अपेक्षाएं किया कि वह उन्नतशील नई प्रजातियों को विकसित करने पर ध्यान दें। उप महानिदेशक डा. राज शशि गौर ने कहा कि विज्ञान को बायोटेक्नोलॉजी की नई तकनीक को ध्यान में रखते हुए परियोजनाएं बनानी चाहिए जिससे उनका सीधा लाभ किसानों तक पहुंचा जा सके उप महानिदेशक डॉक्टर परमिंदर सिंह ने विज्ञानको से सुरुवात होते हुए कहा शोध कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए और अच्छे शोध जनरल में शोध पत्रों का प्रकाशन एवं पेटेंट का प्रत्येक वैज्ञानिक को प्रयास करना होगा तभी गुणवत्ता युक्त शोध किया जा सकेगा।

उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद
द्वारा
सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी
विश्वविद्यालय, मेरठ
का भ्रमण करने और समीक्षा के उपरांत की
कार्यवृत्त
प्रसार निदेशालय प्रगति रिपोर्ट



उ० प्र० कृषि

निकट राजकीय उद्यान, आलमबाग, लखनऊ (उ०प्र०)- 226005

अनुसंधान परिषद

सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (SVPUAT),
मेरठ के दौरे की कार्यवृत्त।

4-5 अगस्त, 2025 को, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (UPCAR), लखनऊ के निम्नलिखित सदस्यों ने पिछले तीन वर्षों (2022-2025) में परिसर और संबद्ध कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) में अनुसंधान, शिक्षा और प्रसार की समीक्षा के लिए सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ का दौरा किया:

1. डॉ. संजय सिंह, महानिदेशक
2. डॉ. परमेश्वर सिंह, उप महानिदेशक (कृ० शि० एवं प्रौ० ह०)
3. डॉ. राजर्षि कुमार गौड़, उप महानिदेशक (अनु० परि० प्र० एवं सम०)

कर्मचारीविवरण (20 KVK)		
स्वीकृत पद	भरे हुए पद	रिक्त पद
320	194	126

KVK गतिविधियाँ (तीन वर्ष)	
	<ul style="list-style-type: none"> • (20 KVK, 01 कृषि ज्ञान केंद्र (KVK) और 03 अनुसंधान केंद्र SVPUAT, मेरठ के अंतर्गत आते हैं)
1.	<p>प्रमुख प्रसार उपलब्धियाँ</p> <p>A. मुख्य प्रसार उपलब्धियाँ:</p> <ul style="list-style-type: none"> • 483 OFT (किसानों के खेत पर परीक्षण) आयोजित किए गए, जिनमें 2519 किसान शामिल थे। • तिलहन पर 7520 CFLD (सामने पंक्ति प्रदर्शन) 3080.91 हेक्टेयर क्षेत्र में आयोजित किए गए। 35% प्रतिभागियों ने प्रौद्योगिकी को अपनाने में रुचि दिखाई, और उन्नत किस्म से उपज में 27% की वृद्धि हुई। • दलहन पर 3517 CFLD 1342.20 हेक्टेयर क्षेत्र में आयोजित किए गए। 20% प्रतिभागियों ने प्रौद्योगिकी को अपनाने में रुचि दिखाई, और उन्नत किस्म से उपज में 22% की वृद्धि हुई। • FLD के माध्यम से सहकर्मी सीखने और किसान-से-किसान प्रसार को बढ़ावा मिला, जिससे जागरूकता में 42% और प्रौद्योगिकी अपनाने में 16

	<p>प्रौद्योगिकियों की वृद्धि हुई।</p> <ul style="list-style-type: none"> • केंद्रों के खेतों पर प्रदर्शन इकाइयाँ (प्राकृतिक, जैविक और रासायनिक) स्थापित की गईं। • तीन वर्षों में 4248 पाठ्यक्रम/प्रशिक्षण आयोजित किए गए, जिनमें 86,196 प्रतिभागी शामिल थे। 60% प्रशिक्षणों में महिला प्रतिभागी शामिल थीं; विषयों में मूल्य संवर्धन, आईसीटी (ICT) से लेकर डेयरी प्रबंधन तक शामिल थे। • तीन वर्षों में, प्रशिक्षित युवाओं में से 40% लड़कियाँ थीं, और 25% SC/ST श्रेणियों से थीं। प्रशिक्षण डिजिटल फार्मिंग से लेकर कौशल-उन्मुख और उद्यमिता तक थे। • KVK अधिकारियों के 16 HRD (मानव संसाधन विकास) प्रशिक्षण विभिन्न संस्थानों, जिनमें SVPUAT, EEI नीलोखेड़ी, NIAM जयपुर शामिल हैं, में आयोजित किए गए। • 2022-2023 से 2024-25 तक, 1100 पाठ्यक्रमों ने कृषि, बागवानी, पशुपालन और ब्लॉकों में गैर सरकारी संगठनों से 21,656 प्रसार कार्यकर्ताओं को कवर किया। • 3 वर्षों के दौरान 389 किसान मेले, 549 फील्ड डे, 548 जागरूकता अभियान आयोजित किए गए। • फसल अवशेष प्रबंधन के लिए मेले, जागरूकता अभियान आदि जैसी 1914 गतिविधियाँ की गईं, जिनमें 79,546 किसान शामिल थे। • कुल 11,945 मिट्टी के नमूनों का परीक्षण 3 वर्षों में किया गया। • 3 वर्षों के दौरान बीज उत्पादन 14,050.14 क्विंटल था। • 64,251 किलोग्राम जैव-उत्पाद (Bio-Products) उत्पादित किए गए। • तीन वर्षों के दौरान 12,04,691 रोपण सामग्री (Planting Material) का उत्पादन किया गया। • रबी सीज़न (2022-2025) में बीज उत्पादन क्रमशः 3136.15 क्विंटल, 3640.72 क्विंटल और 3671.14 क्विंटल था, और खरीफ सीज़न (2022-2025) में यह क्रमशः 390.9 क्विंटल, 1083.91 क्विंटल और 1125.17 क्विंटल था। • सलाहकार सेवाओं के रूप में 1,26,993 संदेश प्रसारित किए गए। • 530 साहित्य, 88 सफलता की कहानियाँ शामिल थीं, जिनमें से 18 वार्षिक प्रगति रिपोर्ट में प्रकाशित हुईं।
	<p>B. नवाचार दृष्टिकोण और विशेष परियोजनाएँ (पिछले तीन वर्ष):</p> <ul style="list-style-type: none"> • डिजिटल पहल: लाइव परामर्श में 6 ब्लॉक शामिल किए गए। “किसान

	<p>सारथी"ऐप पर 18,92,610 किसान पंजीकृत हैं।</p> <ul style="list-style-type: none"> ● जैविक खेती: किसान-नेतृत्व वाले प्रसार के माध्यम से जैविक खेती अपनाने के लिए 800 किसानों को प्रशिक्षित किया गया। ● प्रभाव: SCSP (अनुसूचित जाति उप-योजना) के तहत, प्रशिक्षणों में महिलाओं की भागीदारी 15% से कम से बढ़कर 35% से अधिक हो गई। प्रौद्योगिकी अपनाने की दर लगभग 18% से बढ़कर 50% से अधिक हो गई। प्रति वर्ष औसत पारिवारिक आय ₹10,000 से बढ़कर ₹15,000–20,000 हो गई। प्रति वर्ष रोजगार के दिन 100-120 दिनों से बढ़कर 180-210 दिन हो गए। ● समझौता ज्ञापन (MOU): <ul style="list-style-type: none"> ✓ ICAR-CSSRI, करनाल के साथ हिंडनरूट्ससेंसिंग (HIROS) – स्केलेबल जल और विलेय संतुलन मॉडलिंग और सूचित किसान कार्यों के माध्यम से नदी कायाकल्प के लिए। ✓ IIL, नई दिल्ली के साथ फसल प्रणाली में उत्पादन के गुणात्मक और मात्रात्मक संवर्धन के लिए किसानों के बीच उन्नत कृषि-प्रसार गतिविधियों और जागरूकता कार्यक्रम के प्रसार पर। ✓ KVK हापुड़, मुजफ्फरनगर – II और शामली पर प्रभाव – उन्नत कृषि-प्रसार गतिविधियों और जागरूकता कार्यक्रम के प्रसार पर। ✓ ICAR- IARI, पूसा, नई दिल्ली के साथ KVK फार्मों पर बीज उत्पादन के संबंध में। ✓ भारतीय सेना के साथ सेवानिवृत्त होने वाले/सेवानिवृत्त सेना कर्मियों के लिए क्षमता निर्माण पर। ✓ कृषि विज्ञान केंद्र हापुड़, मुजफ्फरनगर – II और शामली के सहयोग से अमृत इंटरनेशनल कार्यक्रम, जिसे आईपीएल सेंटर फॉररूरलआउटरीच (ICRO), नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित किया गया।
	<p>C. नए नवाचार और प्रौद्योगिकी:</p> <ul style="list-style-type: none"> ● किस्मों का लोकप्रियकरण: उन्नत बासमती चावल किस्म (PB-1637, PB-1718, PB-1509, Pant Sugandha-27), मेंथा की HYV (Sim Saryu), लौकी हाइब्रिड (Anokhi- F1)। ● बायो-फोर्टिफाइड: गेहूँ की किस्म (WB-02, DBW-187), सरसों की किस्म (Pusa Mustard-31), मसूर की किस्म (Pusa Masoor Ageti)। ● बागवानी फसलें: ग्लेडियोलस (American Beauty), गेंदा (Pusa Narangi),

	<p>कद्दू (Kashi Harit) का लोकप्रियकरण किया गया।</p> <ul style="list-style-type: none"> ● कृषि पद्धतियाँ: गन्ने के साथ लहसुन की अंतरफसल, बासमती चावल में शीथब्लाइट के लिए ट्राइकोडर्माहरज़ियानियम जैव एजेंट का अनुप्रयोग और गन्ने की फसल में स्थान प्रबंधन (ट्रेंच विधि)।
	<p>D. बुनियादी ढाँचा, प्रशासन और अनुपालन:</p> <ul style="list-style-type: none"> ● रिपोर्टिंग: मासिक रिपोर्ट गतिविधि अपडेट, प्रशिक्षण सत्र और प्रदर्शन के लिए होती हैं और हर महीने जमा की जाती हैं। त्रैमासिक रिपोर्ट समेकित समीक्षा और प्रगति ट्रैकिंग पर ध्यान केंद्रित करती हैं, और हर तीन महीने में एक बार आवश्यक होती हैं। वार्षिक रिपोर्ट सभी गतिविधियों और उपलब्धियों का एक व्यापक सारांश प्रदान करती हैं, और साल में एक बार जमा की जाती हैं। ● इकाइयाँ: KVK मुजफ्फरनगर-II और KVK मेरठ में आधुनिक गुड प्रसंस्करण इकाई की स्थापना, जिसे ICAR- ISRI लखनऊ द्वारा ₹35.00 लाख की लागत से वित्त पोषित किया गया। ● प्रयोगशाला: राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड द्वारा वित्त पोषित मिनी शहद परीक्षण प्रयोगशाला और प्रदर्शन इकाई की स्थापना, जिसकी लागत ₹42.77 लाख थी। ● अन्य विकास: सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, हाई-टेक वेजिटेबल नर्सरी, गहन बागवानी डेमो यूनिट्स AWS (स्वचालित मौसम स्टेशन) और सौर ऊर्जा संयंत्र भी विकसित किए गए हैं। ● प्रशासनिक कार्य: प्रशासनिक कार्य के लिए जून, 2022 में प्रसार परिषद का भी विकास किया गया।
2.	परिक्रामी निधि की स्थिति (Revolving Fund Status):
	<ul style="list-style-type: none"> ● तीन वर्षों में वित्तीय प्रगति 2022-23 में ₹259.95 लाख, 2023-24 में ₹317.68 लाख, और 2024-25 में ₹438.12 लाख है। ● परिक्रामी निधि का मुख्य रूप से KVK को मजबूत करने, फार्म विकास, फसल उत्पादन (बीज/वाणिज्यिक), और कुशल श्रमिकों के भुगतान के लिए उपयोग किया जाता है।
3.	परिक्रामी निधि की उपयोग प्रक्रिया:
	<ul style="list-style-type: none"> ● परिक्रामी निधि की उपयोग प्रक्रिया में योजना, अनुमोदन, खरीद और उत्पादन, बिक्री और राजस्व सृजन, रसीद प्रबंधन, पुनर्निवेश, रिकॉर्ड रखरखाव और वार्षिक रिपोर्ट जमा करना शामिल है।
4.	पुरस्कार और मान्यता:

	<ul style="list-style-type: none"> उत्कृष्ट KVK पुरस्कार - 02 (KVK हापुड और KVKशाहजहाँपुर)।
5.	प्रसार के लिए प्रकाशन:
	<ul style="list-style-type: none"> मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशकों के माध्यम से 34 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। NAAS ≥ 6 से ऊपर के अनुसंधान प्रकाशन 2022 में 18, 2023 में 27 और 2024 में 36 हैं।
6.	उत्पन्न राजस्व:
	<ul style="list-style-type: none"> प्रायोजन और बीज बिक्री के माध्यम से किसान मेला से 2022 से 2024 तक उत्पन्न निधि क्रमशः 20.39 लाख, 26.99 लाख और 34.13 लाख है। बीज उत्पादन से ₹2,62,81,244.00, रोपण सामग्री से ₹3,94,315.00 और मिट्टी के नमूनों के परीक्षण से ₹1,65,000.00 राजस्व प्राप्त हुआ।
7.	चल रही परियोजनाएँ:
	<ul style="list-style-type: none"> विभिन्न सरकारी योजनाओं के तहत परियोजनाएँ शुरू की गई हैं, जैसे पीएम मत्स्य संपदा योजना, मिनी हनी टेस्टिंग प्रयोगशाला, उन्नत कृषि-प्रसार गतिविधियों और जागरूकता का प्रसार, फसल प्रणाली में उत्पादन के गुणात्मक और मात्रात्मक संवर्धन के लिए कार्यक्रम, एग्री-ड्रोन परियोजना, हाई-टेक वेजिटेबल नर्सरी, सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, प्राकृतिक खेती, एफपीओ आदि।
8.	KVK का कुल बजट (आईसीएआर और यूपी का हिस्सा वर्षवार):
	<ul style="list-style-type: none"> KVK का बजट 100% आईसीएआर द्वारा साझा किया जाता है।
9.	प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण/अनुसंधान की स्थिति:
	<ul style="list-style-type: none"> केवल 19 KVK शामिल हैं। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मिंग सिस्टम्स रिसर्च के सहयोग से 20 केंद्रों के 40 वैज्ञानिकों को प्रशिक्षित किया गया। 104 प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान 2080 किसानों को प्रशिक्षित किया गया। किसानों के खेतों पर 40.8 हेक्टेयर क्षेत्र में 102 प्रदर्शन आयोजित किए गए। 85 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें 5661 किसान और अन्य हितधारक शामिल थे। प्राकृतिक खेती प्रदर्शन क्षेत्रों में, तीसरे वर्ष में जैविक कार्बन में 0.2 प्रतिशत (0.39 से 0.59 तक) की वृद्धि देखी गई।
10.	पेटेंट /लाइसेंस:
	<ul style="list-style-type: none"> शहरी और अर्ध-शहरी सब्जी खेती के लिए टावर फार्मिंग उपकरण, डिज़ाइन संख्या: 437009-001, दिनांक: 11/11/2024। तेल सुगंध विसारक के साथ स्ट्रॉबेरी पैकिंग बॉक्स, डिज़ाइन संख्या: 6384806, दिनांक: 22/08/2024।

11.	किसान स्तर पर अंगीकरण और प्रभाव:
	<ul style="list-style-type: none"> • KVK बिजनौर और शामली में दो ड्रोन और प्रौद्योगिकी के लाइव प्रदर्शन के लिए विश्वविद्यालय मुख्यालय में एक ड्रोन खरीदा गया। 16 प्रौद्योगिकियाँ हैं, जिन्होंने 677 गाँवों को कवर किया, जिनमें से 59,487 किसानों द्वारा अपनाई गई: • किस्म:बासमती चावल किस्म (PB-1637, PB-1718, PB-1509, Pant Sugandha-27), मेंथा की HYV (Sim Saryu), लौकी हाइब्रिड (Anokhi-F1)। • बायो-फोर्टिफाइड:गेहूँ की किस्म (WB-02, DBW-187), सरसों की किस्म (Pusa Mustard-31), मसूर की किस्म (Pusa Masoor Ageti)। • बागवानी फसलें:ग्लेडियोलस (American Beauty), गेंदा (Pusa Narangi), कद्दू (Kashi Harit)। • कृषि पद्धतियाँ:गन्ने के साथ लहसुन की अंतरफसल, बासमती चावल में शीथब्लाइट के लिए ट्राइकोडर्माहरज़ियानियमजैव एजेंट का अनुप्रयोग और गन्ने की फसल में स्थान प्रबंधन (ट्रेंच विधि)।
12.	महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए महिला कार्यक्रमों की संख्या (पिछले 3 वर्षों में वर्षवार):
	<ul style="list-style-type: none"> • निरक्षर महिलाओं के लिए विभिन्न क्षेत्रों की पेशकश करने वाले 100 पाठ्यक्रम, जिनमें लगभग 2500 प्रतिभागी शामिल हैं। • महिला विकास कार्यक्रमों के रूप में हुनर हाट, महिला संवाद, उद्यमी महिला समागम।
13.	स्टार्ट-अप/उद्यमिता:
	<ul style="list-style-type: none"> • आर्या योजना के तहत मुर्गी पालन, मशरूम उत्पादन और शहद उत्पादन में उद्यमिता विकास आयोजित किया जाता है। • महिलाओं के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 73 महिला उद्यमी बनीं। • ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के विकास के लिए उद्यमिता विकास कार्यक्रम के परिणामस्वरूप 140 SHGs (स्वयं सहायता समूह) के अंतर्गत 1607 सदस्य शामिल किये गए।
14.	शैक्षणिक सुदृढीकरण के लिए भविष्य की योजनाएँ:
	<p>कृषि में शैक्षणिक सुदृढीकरण पाँच मुख्य फोकस क्षेत्रों के माध्यम से प्राप्त किया जाना है-</p> <ul style="list-style-type: none"> • विषय वस्तु विशेषज्ञ:इसमें जलवायु-स्मार्ट कृषि और सटीक खेती में विशेषज्ञता

	<p>पर ध्यान केंद्रित करना शामिल होगा।</p> <ul style="list-style-type: none"> ● संकाय विकास कार्यक्रम:ये कार्यक्रम NAARM और ICAR जैसे संस्थानों के सहयोग से लागू किए जाएंगे। ● मॉड्यूलर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम:किसानों और ग्रामीण युवाओं के लिए विशेष प्रशिक्षण विकसित किया जाएगा। ● डिजिटल कृषि क्षेत्र:ये क्षेत्र कृषि में IoT (इंटरनेट ऑफ थिंग्स) और ड्रोन का उपयोग करने पर ध्यान केंद्रित करेंगे। ● संयुक्त अनुसंधान परियोजनाएँ:अनुसंधान प्रयास महत्वपूर्ण वैश्विक चुनौतियों, विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा पर केंद्रित होंगे।
15.	विकसित भारत @2047 के लिए दृष्टिकोण:
	<ul style="list-style-type: none"> ● सामाजिक समावेश:यह स्तंभ Nutri-Smart Village (पोषक-स्मार्ट गाँव) बनाने, लैंगिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने और समुदायों में क्षमता निर्माण को मजबूत करने पर केंद्रित है। ● युवा सशक्तिकरण:यहाँ लक्ष्य युवाओं के लिए एक सतत आय और लाभप्रद रोजगार के अवसर सुनिश्चित करना है। ● कृषि उन्नति:यह KVK के माध्यम से एफपीओ (किसान उत्पादक संगठन) के प्रचार और व्यापक प्राकृतिक खेती संवर्धन से प्रेरित है। ● तकनीकी एकीकरण:इसमें वैज्ञानिक नवाचार और व्यावहारिक अनुप्रयोग के बीचजीरो टेक्नोलॉजी गैपसुनिश्चित करने के लिए एक मजबूतरिसर्च-टू-फील्ड लिंकेजस्थापित करना शामिल है। ● साझेदारी सुदृढीकरण:यह अंतिम स्तंभ एक प्रभावीप्रसार मॉडलविकसित करने और मजबूतसार्वजनिक-निजी भागीदारीको बढ़ावा देने पर केंद्रित है।

उपकार टीम अवलोकन एवं सुझाव :

विश्वविद्यालय प्रसार में गंभीर प्रयास कर रहा है और प्रौद्योगिकी विकास, अवसंरचना सुधार जैसी कई क्षेत्रों में प्रगति प्रदर्शित की है। हालांकि, संस्थान निम्नलिखित कारणों से चुनौतियों का सामना करना जारी रखता है: अपर्याप्त मानव संसाधन और विशेषज्ञ वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकियों का अपर्याप्त व्यावसायिकरण, कमजोर परियोजना प्रबंधन प्रणाली, और जमीनी स्तर पर प्रसार के प्रभावों की सीमित दृश्यता। इसके अतिरिक्त, संस्थान को निम्नलिखित चुनौतियों का सामना है:

- विश्वविद्यालय द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियां अक्सर निःशुल्क प्रदान की जाती हैं।

जबकि यह किसानों के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है, यह राजस्व उत्पन्न करने में बाधा डालता है और संस्थान की आर्थिक स्थिरता को कमजोर करता है। प्रौद्योगिकी लाइसेंसिंग और व्यावसायीकरण के लिए एक तंत्र की आवश्यकता है।

- SVPUAT, मेरठ के प्रसार निदेशक द्वारा प्रस्तुत प्रस्तुति सराहनीय थी। हालांकि, चर्चा के दौरान किसानों पर प्रसार गतिविधियों के प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दिए।
- सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस की स्थिति बहुत दयनीय, इसमें सुधार की आवश्यकता।
- सचल पशु चिकित्सा सेवा (मोबाइल वेटेरिनरी सर्विस) एक प्रशंसनीय पहल है, इसके लिए प्रसार निदेशालय के प्रभाव से किसानों की आजीविका पर इसके परिणाम को व्यवस्थित रूप से दस्तावेज़ित करने की आवश्यकता है।
- परियोजना निधियों की प्रभावी योजना, निगरानी और उपयोग के लिए एक पीएमई सेल स्थापित करें।
- कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों को NAAS-रेटेड जर्नल में प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- प्रौद्योगिकी वाणिज्यिकीकरण और लाइसेंसिंग को बढ़ावा दें, यह सुनिश्चित करते हुए कि उत्पादों पर विश्वविद्यालय का स्वामित्व रहे।
- किसानों पर प्रसार गतिविधियों के प्रभाव को मापने और दस्तावेज़ित करने के लिए एक प्रणाली विकसित करें।
- पोल्ट्री फीड और सुधारित नस्लों के वाणिज्यिकीकरण में पोल्ट्री रिसर्च सेंटर का समर्थन करें।
- 126 रिक्त पदों को भरकर अपर्याप्त मानव संसाधन और विशेषज्ञ वैज्ञानिकों की चुनौती का समाधान करें।
- प्राकृतिक कृषि के लिए 'मास्टर ट्रेनर्स' विकसित करें।
- कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा बनाये गए उत्पादों को लाइसेंसिंग को बढ़ावा देने के साथ साथ एक औपचारिक टीबीआई या बौद्धिक संपदा (आईपी) प्रबंधन सेल की स्थापना करें।
- मौजूदा MOUs (ICAR-CSSRI, IIL, ICAR-IARI के साथ) का रणनीतिक रूप से लाभ उठाना केवल जानकारी प्रसार के लिए नहीं बल्कि सुरक्षित वित्तपोषण या तकनीकी हस्तांतरण शुल्क के लिए एवं सहयोगात्मक दृष्टिकोण से अग्रसर होने के लिए भी करें।
- अधिक टिकाऊ प्रसार मॉडल के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी।
- सभी केंद्रों के कार्य में समानता एवं गुणवत्ता बनी रहने के लिए हर सीजन से पहले

सभी कृषि विज्ञान केंद्र के कार्यक्रम की समीक्षा करना जरूरी है।



प्रसार निदेशालय, स० व० प० कृ० एवं प्रौ० विश्वविद्यालय, मेरठ की



समीक्षा करते हुए

कृषि विज्ञान केंद्रों की समीक्षा बैठक में प्रस्तुत की प्रगति रिपोर्ट

● जनवाणी संवाददाता, मोदीपुरम

सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि विवि में मंगलवार को कृषि विज्ञान केंद्रों के कार्यों की समीक्षा करने के लिए बैठक आयोजित की गई। बैठक में तीन वर्ष की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। समीक्षा बैठक में उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद लखनऊ के महानिदेशक डॉ. संजय सिंह अतिथि रहे। बैठक में निदेशक प्रसार डॉ. पीके सिंह ने कृषि विज्ञान केंद्रों की तीन वर्षीय प्रगति रिपोर्ट वर्ष 2022-2024 का प्रस्तुतिकरण दिया। विश्वविद्यालय कार्यक्षेत्र के 20 कृषि विज्ञान केंद्रों के कार्यों का किसानों के बीच अंगीकरण, प्रभाव, मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया। डॉ. संजय सिंह ने कृषि विज्ञान केंद्रों पर कराए जा रहे कार्यों की सराहना की और सुझाव दिया कि कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा कराये जा रहे प्रशिक्षणों के प्रभाव को अपने



प्रस्तुतिकरण में सम्मिलित करें। डॉ. परमेन्द्र सिंह ने सुझाव दिया कि इस तरह की समीक्षा बैठक वर्ष में एक बार जरूर आयोजित की जाए। डॉ. राजर्षि गौड़ ने कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा कृषि से संबंधित मोबाईल एप का प्रचार

प्रसार किए जाने, जिससे किसानों को किसान सुविधा, मंडी भाव, फसल बीमा आदि की जानकारी प्राप्त हो सके। इस दौरान डॉ. एसके लोधी, डॉ. एसके त्रिपाठी, डॉ. पीके सिंह आदि मौजूद रहे।

राष्ट्रीय सहारा | www.rashtriyasahara.com

युवाओं व महिलाओं को खेती के व्यावसायिक कौशल में निपुण करें : डॉ. संजय सिंह

मेरठ (एसएनबी)। उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डा. संजय सिंह ने सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय के सभागार में कृषि विज्ञान केंद्रों के कार्यों की समीक्षा की। डा. संजय सिंह ने कहा कि युवाओं और महिलाओं को खेती से संबंधित व्यावसायिक कौशल का प्रशिक्षण कर निपुण किया जाए। कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा कराये जा रहे प्रशिक्षणों के इम्पेक्ट को प्रस्तुतिकरण में सम्मिलित किया जाए। कृषि विज्ञान केंद्रों के प्रक्षेत्रों पर किये जा रहे बीजोत्पादन कार्यक्रम में एफपीओ को भी जोड़ा जाए।

महानिदेशक डा. संजय सिंह ने कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा कराए जा रहे कार्यों की सराहना की एवं सुझाव दिया कि उपकार को नये परियोजनाओं के प्रस्ताव प्रेषित किये जाये जिससे नयी परियोजनाओं को आवयक्तानुसार स्वीकृत किया जा सके। उपकार द्वारा दिये जाने वाले पुरस्कारों के लिए कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा आवेदन किये जाए। उप महानिदेशक डा. परमेन्द्र सिंह, उपमहानिदेशक सुझाव दिया कि इस तरह की समीक्षा बैठक वर्ष में एक बार जरूर की जाए, जिससे उपकार एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के कार्यों का मूल्यांकन कर प्रसार को एक नई दिशा व गति दी जा सके। उप महानिदेशक डा. राजर्षि कुमार गौड़ ने कहा कि कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा कृषि से सम्बन्धित मोबाईल एप प्रचार प्रसार किया जाए, जिससे किसानों को किसान सुविधा, मंडी भाव एवं फसल बीमा की जानकारी सुगमता से पा सके। निदेशक प्रसार डा. पीके सिंह ने कृषि विज्ञान केंद्रों की तीन वर्षीय प्रगति रिपोर्ट वर्ष 2022-2024 का प्रस्तुतिकरण किया। उन्होंने विश्वविद्यालय कार्यक्षेत्र के 20 कृषि विज्ञान केंद्रों के कार्यों का किसानों के बीच अंगीकरण, प्रभाव एवं मूल्यांकन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर प्रसार निदेशालय के डा. एसके लोधी, डा. एसके त्रिपाठी भी मौजूद रहे।